भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उग्रवादी चरण

1905–1918 ई.

महाविद्यालय

स्वामी विवेकानंद गर्ल्स कॉलेज, रूपनगढ़

विषय एवं कक्षा

इतिहास | बी.ए. 5th सेमेस्टर

व्याख्याता

श्री अमित कुमार

उग्रवादी चरण का परिचय

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में **1905 से 1918** का काल **उग्रवादी चरण** के रूप में जाना जाता है।

- **नरमपंथी नेताओं** की याचना-नीति से असंतोष बढ़ा
- **स्वराज, स्वदेशी और बहिष्कार** — नए नारे उभरे
- ब्रिटिश शासन के **सीधे विरोध** की नींव रखी गई
- लाल-बाल-पाल की **त्रिमूर्ति** ने आंदोलन को दिशा दी

Made with GAMMA

उग्रवाद के उदय की पृष्ठभूमि

अनेक कारणों ने मिलकर उग्रवादी विचारधारा को जन्म दिया:

नरमपंथियों की विफलता

दशकों की याचनाओं का कोई ठोस परिणाम नहीं निकला

आर्थिक शोषण

अकाल, गरीबी और ब्रिटिश नीतियों से भारतीय जनता त्रस्त

विश्व घटनाओं का प्रभाव

जापान द्वारा रूस की पराजय (1905) से एशियाई आत्मविश्वास जागा

राष्ट्रवादी साहित्य

तिलक के 'केसरी' और विवेकानंद के विचारों ने युवाओं को जोड़ा

Made with GAMMA

बंग-भंग (1905) और उसका प्रभाव

विभाजन का कारण

लॉर्ड कर्ज़न ने **16 अक्टूबर 1905** को बंगाल को धर्म के आधार पर दो भागों में बाँटा — **पूर्वी बंगाल (मुस्लिम बहुल)** और **पश्चिमी बंगाल (हिन्दू बहुल)**।

प्रमुख प्रभाव

- राष्ट्रीय एकता की भावना प्रबल हुई
- **स्वदेशी व बहिष्कार आंदोलन** का सूत्रपात
- 16 अक्टूबर को **'रक्षाबंधन दिवस'** मनाया गया
- 1911 में विभाजन रद्द करने पर ब्रिटिश सरकार मजबूर हुई

Made with GAMMA

उग्रवादी नेताओं का योगदान — लाल–बाल–पाल

बाल गंगाधर तिलक

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।" गणपति व शिवाजी उत्सव से जन-जागरण किया। 'केसरी' पत्र से राष्ट्रवाद फैलाया।

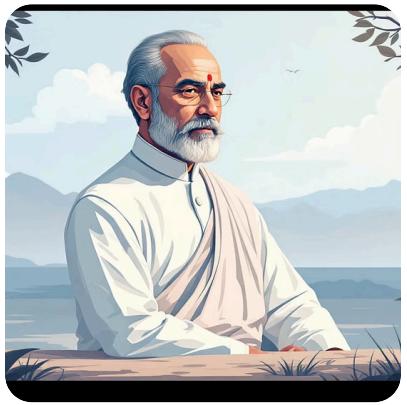

बिपिन चंद्र पाल

"निष्क्रिय प्रतिरोध" के प्रमुख प्रवक्ता। स्वदेशी आंदोलन के सशक्त प्रचारक। 'New India' पत्र के संपादक।

लाला लाजपत राय

'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध। पंजाब में उग्रवाद के सशक्त स्तंभ। जनता में राष्ट्रीय चेतना जगाई।

Made with GAMMA

स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन

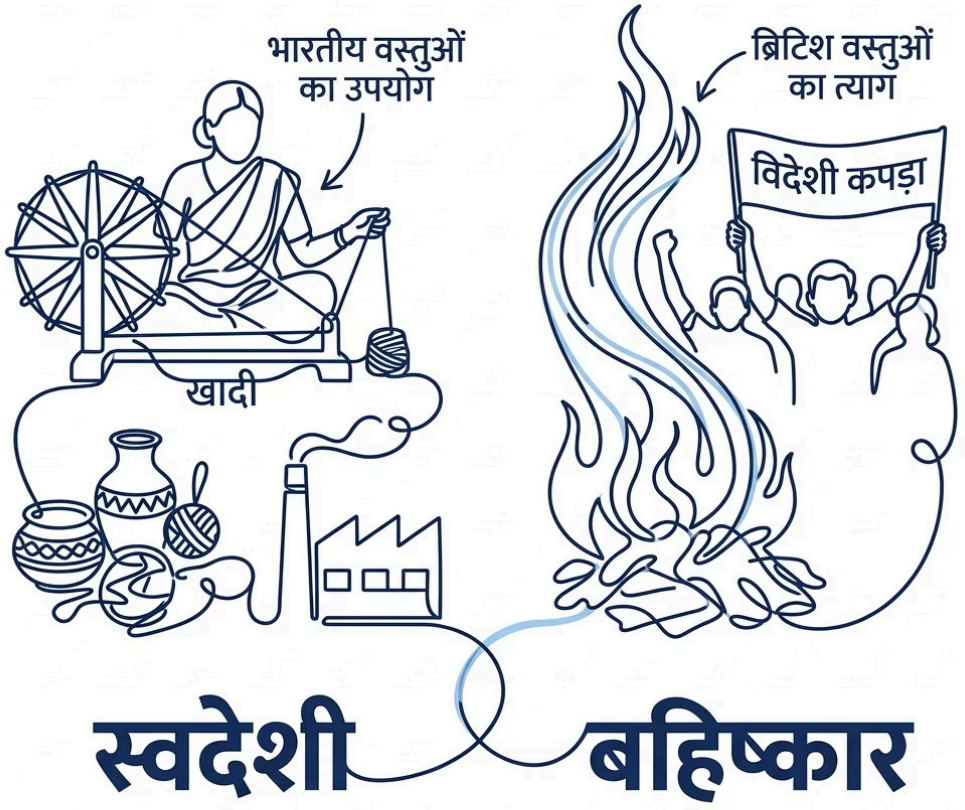

मुख्य विशेषताएँ

- **ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार** — विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई
- भारतीय उद्योगों को **प्रोत्साहन** दिया गया
- **खादी व हस्तशिल्प** को राष्ट्रीय पहचान मिली
- आंदोलन ने **आर्थिक राष्ट्रवाद** की नींव रखी
- महिलाओं की **सक्रिय भागीदारी** पहली बार देखी गई

Made with GAMMA

राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन

उद्देश्य

ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में **भारतीय मूल्यों** पर आधारित शिक्षा का प्रसार

राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना

पूरे बंगाल में **600 से अधिक राष्ट्रीय विद्यालय** खोले गए; तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा पर बल

बंगाल नेशनल कॉलेज

1906 में स्थापित; **अरविंद घोष** इसके प्रथम प्राचार्य बने — शिक्षा में राष्ट्रवाद का समावेश

Made with GAMMA

सूरत विभाजन (1907) और उसका प्रभाव

1907 के सूरत अधिवेशन में **नरमपंथियों और उग्रवादियों** के बीच गहरे मतभेद के कारण कांग्रेस दो भागों में टूट गई। इस विभाजन ने आंदोलन को अस्थायी रूप से कमजोर किया, किंतु उग्रवादियों की विचारधारा जनमानस में गहरी जड़ें जमा चुकी थी।

Made with GAMMA

उग्रवादी आंदोलन की उपलब्धियाँ

1905

बंग-भंग विरोध

राष्ट्रव्यापी जन-जागरण की शुरुआत

600+

राष्ट्रीय विद्यालय

बंगाल में स्थापित नए शिक्षण केंद्र

1911

बंग-भंग रद्द

ब्रिटिश सरकार विभाजन वापस लेने पर मजबूर

1916

लखनऊ समझौता

कांग्रेस पुनर्एकीकरण की दिशा में बड़ा कदम

जन-जागरण: आम जनता पहली बार राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ी — किसान, महिलाएँ व छात्र सभी शामिल हुए।

वैचारिक आधार: स्वराज, स्वदेशी और स्वावलंबन के सिद्धांत गाँधीजी के भावी आंदोलन की नींव बने।

Made with GAMMA

उग्रवादी चरण का ऐतिहासिक महत्व एवं निष्कर्ष

🔥 राष्ट्रवाद की ज्वाला

उग्रवादियों ने भारतीय जनमानस में **आत्मविश्वास और संघर्ष की चेतना** जगाई

🌱 गाँधी युग की नींव

स्वदेशी, बहिष्कार और सत्याग्रह के बीज इसी चरण में **बोए गए**

🏆 ऐतिहासिक विरासत

लाल-बाल-पाल की विचारधारा ने **1947 की स्वतंत्रता** का मार्ग प्रशस्त किया

निष्कर्ष: उग्रवादी चरण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह स्वर्णिम अध्याय है जिसने नरम प्रार्थनाओं को **साहसिक संघर्ष** में बदल दिया और करोड़ों भारतीयों को एक सूत्र में पिरोया।

Made with GAMMA